Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 2, Feb- 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 01/02/2021 Accepted on : 14/02/2021 Publication Date: 15/02/2021

अल्मा कबूतरी में चित्रित सामाजिक संस्थाएं : स्वरूप व कार्यात्मकता

Urmila bhagat
Ph.D scholar, Cotton University, Assam, India
Email - ubs.bns@gmil.com

सार-संक्षेप: समकालीन उपन्यास साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा और उनके द्वारा रचित उपन्यास *अल्मा कबूतरी* का विशेष महत्व है। लेखिका ने विलुप्त होती कबूतरा जनजाति और उस समाज की नारी की स्थिति का जीवन्त चित्रण किया है। प्राचीन काल से ही नारी की स्थिति पुरुषों से निम्न रही हैं। आज भी नारी की स्थिति पुरुषों के तुलना में दयनीय है। आज भी परिवार, धर्म और समुदाय संस्थाओं के माध्यम से नारी का शोषण और अधिकारों का हनन करने का साजिस रची जा रही है जिसकी अभिव्क्ति अल्मा कबूतरी में हुई हैं। लेखिका ने समाजिक संस्थाओं के माध्यम से यह दिखाने का सफल प्रयास किया है कि किस तरह संस्थाएँ नारी के विकास या शोषण में सहायक हैं साथ ही लेखिका ने यह भी स्पष्ट किया है कि विरोधात्मक परिस्थितियों के बावजूद नारी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है।

बीज शब्द : अल्मा कबूतरी, सामाजिक संस्थाएं, स्वरूप, कार्यात्मकता ।

1. प्रस्तावना : *अलमा कबूतरी* मैत्रेयी पुष्पा का एक सशक्त उपन्यास है जो आकार, विचार और विस्तार की दृष्टि से बृहत् उपन्यास माना जा सकता है। *अल्मा कबूतरी* बुन्देलखंड की विलुप्त होती जनजाति कबूतर और उनके ऊपर हो रहे अत्याचारों तथा कबूतरा समाज में नारी जीवन के, संघर्ष, शोषण और सचेतना की कहानी है। *अल्मा कबूतरी* उपन्यास में विभिन्न सामाजिक संस्थाएं सामने आई हैं, जिनका स्वरूप और कार्यात्मकता का भी चित्रण हुआ है। परिवार, धर्म और समुदाय संस्थाएं समाज में विशेष महत्व रखती हैं जो मानव समाज और उसके विकास को इंगित करती हैं। इन्हीं संस्थाओं के द्वारा समाज में नारी और पुरुष के महत्व और उनके अस्तित्व को समझा जा सकता है। और ये तीनों संस्थाएं *अलमा कबूतरी* में सामने आई हैं।

2. साहित्य सर्वेक्षण : अल्मा कबूतरी पर अभी तक 'अल्मा कबूतरी में चित्रित सामाजिक संस्थाएं : स्वरूप व कार्यात्मकता' इस दृष्टि से अध्ययन नहीं हुई हैं। इस उपन्यास पर बहुत ही कम आलोचना की गई है। यद्यपी मैत्रेयी 'पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श' नाम से काम हुआ है पर स्वतंत्र रूप तथा इस दृष्टि से अल्मा कबूतरी पर काम नहीं हुआ है।

2. अध्ययन में व्यवह्रत पद्यति और सामग्री : वैज्ञानिक शोध-पत्र लेखन की प्रक्रिया की माँग के अनुसार इस शोध-पत्र में आधारभूत सामग्री *अल्मा कबूतरी* तथा इससे संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथ का सहारा लिया गया है। अध्ययन का पद्धति आलोचनात्मक और विश्लेषणैत्मक है। बहुल रूप से स्वीकृत और व्यवह्रत समकालीन पद्धति **MLA** को यहाँ आधार रूप अपनाया गया है।

3. विश्लेषण एवं निर्वाचन:

अल्मा कबूतरी में चित्रित सामाजिक संस्थाएं : स्वरूप

अल्मा कबूतरी आदिवासी नारी प्रधान उपन्यास है, जिसमें नारी की सामाजिक स्थिति का चित्रण लेखिका ने विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से किया है, साथ ही लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि

नारी को परतंत्र या स्वतंत्र बनाने में इन संस्थाओं का भूमिका कितना महत्व रखती है। *अल्मा कबूतरी* में सामाजिक संस्थाओं के अंतर्गत परिवार, धर्म और समुदाय के स्वरूप और कार्यात्मकता को देखा जा सकता है। हमारे समाज व्यवस्था में नारी को शोषण के लिए असमानता की अचार संहिता गढ़ी गई है :

> स्त्री को कभी शास्त्र से, कभी धर्म से, कभी इतिहास से, कभी मिथक से और कभी आख्यान से जताया गया है कि पुण्य की अधिकारी वे स्त्रियाँ ही हैं जो नेपत्थय में रहीं, आज्ञाकारिणी बनीं और जिसने पुरुष समाज की इच्छानुसार जीवन जीया। जिन स्त्रियों ने अपने दिमाग के दरवाजे कसकर बंद कर लिये वे सुरक्षित बची रहीं लेकिन स्त्रियों की जो टुकड़ी समान स्थान, अवसर और भविष्य की दौड़ में हिस्सा लेने आगे आयी, हिंसा भी उन्हीं के हिस्से पड़ी। (कालिया :64)

इस तथ्य की अभिव्यक्ति अल्मा कबूतरी में हुई है लेकिन गोपाल राय ने इसे आधुनुक नारी का मात्र विद्रोह माना है:

> ...अधिक से अधिक इसे नारी संहिता के प्रति आधुनिक स्त्री का विद्रोह ही माना जा सकता है (राय 2016:390

3.1 अल्मा कबूतरी में चित्रित परिवार संस्था : स्वरूप

इस उपन्यास में लेखिका ने आदिवासी परिवार और कज्जा(सभ्य) परिवार का चित्रण किया है। कदमबाई के पिता अपने समाज में सबसे योग्य लड़के के साथ अपनी बेटी कदम का विवाह करते हैं। तथा समाज और परिवार में अपनी इज्जत को बनाये रखने के लिए बारात को कई दिन तक रखते हैं। मंसाराम सभ्य समाज के अंग हैं। वे अपने परिवार के मुखिया हैं मंसाराम के दो बेटे और पतिव्रता पत्नी हैं। आनंदी पति के हर एक कार्य में सहयोग करती हैं। पति सा सेवा करना वह अपना धर्म मानती है लेकिन वही पति जगंलिया की पत्नी कदमबाई पर आसक्त हो जाता है। और छल से कदमबाई को अपनी वासना का शिकार बनाता है। आनंदी को जब पति और कदम के बारे में पता चलता है, तो वह दुखी हो जाती है। वह नहीं चाहती है कि मंसाराम डेरों पर जाए। वह मंसाराम को धमकी देती है कि वह आग में जलकर मर जाएगी, लेकिन उसके धमकी का कोई असर मंसाराम पर नहीं होता है। आनंदी को परिवार की इज्जत का डर सताने लगता है, बेटे का विवाह कैसे होगा। आनंनदी अपने पति को दोषी न मानकर कदम को दोषी मानती है। आनंदी यू तो पति से झगड़ती है, लेकिन दूसरों के सामने पति का शिकायत नहीं करती है आनंदी मंसाराम का पैर दबाते हुए कहती है कि वह कबूतरी को घर बैठा ले, बस सेवा का मौका उसे देते रहे :

> नारी को समाज की परंपराएँ कमजोर तथा आश्रित बना देती है। और पुरुष सत्ता के कारण ही वह प्रताड़ित तथा पुरुष के सभी कर्मो को क्षमा करने में ही अपनी भलाई समझती है (श्रीधर 2010:131

आनंदी अपने परिवार को बचाने के लिए अपने आप को आग के हवाले कर देती है। लेकिन अपने परिवार को बिखरने से नहीं बचा पाती है और मंसाराम एक दिन हमेशा के लिए डेरे पर चले जाते हैं।

धीरज के पिता एक किसान हैं धीरज नौकरी के लिए दो लाख रूपये माँगता है। वे जमीन बेचकर पैसा दे देते हैं पर धीरज की नौकरी नहीं होती है। जब धीरज लड़की की तरह इज्जत गवाकर घर लौटता है, तो उसकी शादी टूट जाती है पूरे गांव में उनका इज्जत चली जाती है। वह क्रोध में आ कर धीरज को जूतों से पीटते हैं और घर से निकल जाने के लिए कहते हैं। उन्हें बेटे के दर्द से ज्यादा अपनी इज्जत प्यारी होती है। इतना ही नहीं वह पत्नी पर भी हाथ उठाते हुए उसे गंदी-गंदी गालियाँ देते हैं पर पत्नी कुछ नहीं कहती है, उसके विपरीत वह धीरज को ही समझाती है

3.2 अल्मा कबूतरी में चित्रित धर्म संस्था: स्वरूप व कार्यात्मकता

अल्मा कबूतरी में धर्म संस्था का कई रूप सामने आया है। इस उपन्यास में लेखिका ने इस तथ्य को सामने रखा है कि किस तरह से हमारा धर्म पुरुष को कुछ भी करने का छूट देती है। मंसाराम सभ्य समाज में अपना महत्व रखते हैं। वे जंगलिया को लल्लूराज के घर से हनुमान जी की मूर्ति का चोरी करवाते हैं और उसे छुपने के लिए कह कर उसका पता पुलिस को दे देता है। पुलिस उसे मार गिराती है। तथा उसकी पत्नी कदमबाई को छलते हुए उसके साथ शारीरिक संबंध बनाते हैं, जिससे कदमबाई गर्भवती हो जाती है। पाप कर्म करने के बाद भी मंसाराम समाज में इज्जत की जिंदगी जीते हैं, तो कबूतरा को मौत की सजा मिलती है। मंसाराम जैसे दुष्चरित्र और पापी लोग अपने पाप को धोने के लिए पूजा-पाठ का सहारा लेते हैं। आनंदी मंसाराम की पतिव्रता पत्नी के रूप में सामने आती है जो पति के हर कार्य में सहयोग देती है। पति को प्रसन्न रखना अपना धर्म समझती है। जिसकी अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में हुई है:

> मंसाराम का तप ईश्वर आराधना था, तो आनंदी की साधना पति-सेवा था, जैसै कि शास्त्रों में बताया गया है। वह नहाने का पानी भरती, धुले कपड़े देती। चंदन घिसती। पूजा की थाली सजाती। लुटिया माँजकर दूध और जल भरती। फूल-पात जुटाती। परसाद बनाती। पंडितायनों की तरह ऐसे अनेक काम करती, जो पूजा से संबंधित थे। वह पति का किसी भी तरह दिल नहीं दुखाती। आसन डालकर पीछे बैठी रहती, कू क्या जरूरत पड़ जाए? (पुष्पा 2016 :27)

मंसाराम अपनी पत्नी को छलते हैं, तथा उसकी सेवाभाव के बदले उसकी जिंदगी में दूसरी औरत लाकर बैठा देते हैं, आनंदी पति के चरित्रहीन होने पर दुखी हो जाती है आनंदी पति के खुशी के लिए कदमबाई को घर पर रखने तथा उसे सेवा का अवसर देते रहने के लिए कहती है। धर्म औरतो को यही सिखाता है कि वह अपने पति का सेवा करते रहे, चाहे पति कैसा भी हो। यही कारण है कि आनंदी पति के चरित्रहीन होने पर भी उसके सामने विनती करती हुई नजर आती है कि वह उसे सेवा का मौका देते रहे। धर्म औरत को अपने अधिकारों के प्रति लड़ना नहीं सिखाता है।

कबूतरा समाज में धर्म रिवाज के रूप में सामने आता है। भूरी पति की मृत्यु पर कसम खाते हुए कहती है कि एक पतिव्रता नारी अपने पति के संग ही सती हो जाती है, लेकिन वह इस परम्परा को नहीं मानती है। और कसम खाती है कि जब तक बेटे को पढ़ा कर कचहरी के दरवाजे पर नहीं खड़ा कर देगी तब तक वह अपने आप को पतिव्रता नहीं मानेगी। हमारे समाज व्यवस्था में नारी के साथ धर्म के नाम पर अमानवीय व्यवहार किया जाता था। पति की मृत्यु हो जाने पर पत्नी को उसी चिता पर बैठाकर जिंदा जला दिया जाता था और इस अपराध को धर्म का नाम दे दिया जाता था। भूरी जब पंच की बात नहीं मानती है तो पंच उसे सजा देने का निर्णय करतें हैं। भूरी के लिए जल-समाधि की सजा तय की जाती है :

> सोते समय उठा ली जाए। पशु की तरह लाद ली जाए। चीख न पाए, तब तक मुँह भींच दो। इस इस निडर बेहाया को नदी ताल में डुबोना आसान नहीं, तैरकर निकल न पाए गले में भारी पत्थर बाँधो। नहीं तो यह बिरादरी के लिए शेरनी की तरह खूँखार हो उठेगी। (पुष्पा 2016 :76)

लेखिका इस तथ्य को सामने लाई है कि हमारे समाज में धर्म के नाम पर, मर्यादा के नाम पर नारी के साथ अमानवीय व्यवहार होता आया है। समाज कमजोर और लाचार नारी पर अपने बल का जोर दिखाता है, लेकिन वे उन लोगों के खिलाफ कुछ नहीं करते हैं जो असल में गुनाहगार होते हैं। भूरी, कदमबाई और अल्मा

को सजा देने के लिए पंच तत्पर दिखता है, लेकिन वही पंच भूरी पति के हत्यारों तथा कदम और अल्मा के अपराधियों के विरोध में एक शब्द नहीं बोलते हैं।

हमारे समाज में धर्म के नाम पर कितनी ही परम्पराएँ चलती आ रही है। कबूतरा समाज में संकट के समय में कपड़ा, गहना, बरतन के साथ ही नारी को बेचने का परम्परा चलती आ रही है, अल्मा को उसके पिता का दोस्त दुर्जन सिंह के यहां बेच देता है। दुर्जनसिंह अल्मा से कहता है :

> अल्मा तू गिरवी धरी है, समझे रहना। भला इसमें बुराई भी नहीं। हम कबूतराओं में तो यह चलन रहा है-जेवर-गहना-बासन और बेटी मुसीबत के समय काम आते हैं। अब तू मेरी खरीदी हुई है। (पुष्पा 2016 :244)

अल्मा श्रीराम शास्त्री के मौत पर उनकी विधवा की तरह सारे कर्मकांड करती है। अल्मा लाश के साथ श्मशान जाती है। हिन्दू धर्म में स्त्रियों का शमशान जाना वर्जित है अल्मा पंडित से एक माला मांग कर गले में पहन लेती है, मांग में कुमकुम लगाकर चिता का सात फेरे लगाती है। अल्मा को उस रूप में देखकर उमड़ी हुई भीड़ डर जाती है कि कहीं वह चिता पर बैठकर सती न हो जाए। अल्मा धीरे से अग्निमुख को उठाती है और श्रीराम शास्त्री के चिता को अग्नि समर्पित कर देती है उसे ऐसा करते देख पंडित का मंत्रप्रवाह रूक जाता है क्योंकि उसने वैदिक धर्म अपमान किया है। हिन्दू धर्म में स्त्रियों को यह अधिकार नहीं दिया गया है कि वह किसी को भी अग्न्मुख दे सके।

> अल्मा ने आहिस्ता-आहिस्ता अग्निमुख उठा लिया और गँजती मंत्रध्वनि के बीच श्रीराम शास्त्री की चंदन चिता को अग्नि समर्पित कर दी। पवित्र वैदिक क्रिया का ध्वंस! पंडितों का स्वर-प्रवाह जहाँ की तहाँ जम गया। वे अवाक विमूढ स्थित आँखों एक दूसरे को देखते हुए... कपालक्रिया के मंत्र भूल गए। होश आया तो धर्म-अधर्म और पाप-पुण्य के दलदल में फँसे आदमी की मर्मांतक पीड़ा उनके चेहरे पर पुत गई। राजयोग और धर्म संकट, श्रीराम शास्त्री की दाहक्रिया का घोर अपमान...विवर्ण मुख ब्राह्मण अपराधबोध से तिलमिलाए मगर चिल्ला न सके। (पुष्पा 2016 :398-390)

अल्मा धर्म के नाम पर नारी से छीने गए अधिकार को दिलाने का प्रयास किया है तथा पारम्परिक रूढ़ियों का विरोध किरती है। अल्मा हर परिस्थिति में अपने अस्तित्व के संघर्ष करती है।

3.3 अल्मा कबूतरी में चित्रित समुदाय संस्था: स्वरूप व कार्यात्मकता : समुदाय समाज के प्रगति, विकास या उसके पिछड़ेपन में अहम भूमिका निभाती आई है; जिसकी अभिव्यक्ति *अल्मा कबूतरी* में हुआ है। *अल्मा कबूतरी* में समुदाय के कई अंग सामने आए हैं -

3.3.1 कबूतरा समुदाय: मूलरूप से यह कहानी कबूतरा समुदाय का है। 'कबूतर' बुन्देलखण्ड का लुप्त होते आदिवासी समुदाय हैं। आदिवासियों को सभ्य कहे जानेवाले समाज में हीन दृष्टि से देखा जाता है तथा कबूतरा समुदाय को अपराधी धोषित कर उन्हें मानवीय धिकारों से वंचित रखा गया है। इसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। कबूतरा समुदाय चोरी कर, शराब बेच कर अपना जीवनयापन करता है। जंगलिया और कदमबाई सभ्य समाज के छल का शिकार हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप जंगलिया जीवन से हाथ धो बैठता है, तो कदमबाई मंसाराम के बच्चे का माँ बन जाती है। कबूतरा समुदाय में किसी की हत्या हो जाने पर उसके अपनों को रोने तक का अधिकार नहीं होता है और न लाश ही उन्हें नसीब होती है। कबूतरा समाज के पुरुष या तो जंगल में रहते हैं या फिर जेल में। औरतें शराब बनाने और ढ़ालने का काम करती हैं। पुलिस कबूतरा समुदाय के औरतों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उन्हें गंदी-गंदी गालियाँ देते हैं तथा उनके कपड़े फाड़ कर नंगा

कर देते हैं जिसका चित्रण उपन्यास में किया गया है। कबूरता समुदाय, समुदाय में रहकर ही कार्य करता है। और सभी मुखिया के हिसाब से चलते हैं। सरवन मुखिया सभी डोरों पर सौ रूपये का हफ्ता देने की बात कहता है जिससे वे बिना रोक-टोक के शराब बेच सके। कदम जब सौ रूपये नहीं दे पाती है तो मुखिया सजा के रूप में हपते में एक दिन दारू बनाने का अधिकार कदम से झीन लेता है, जिसके कारण वह डेरों में हीन हो जाती है।

पति की हत्या हो जाने के बाद कबूतरा औरत अकेले नहीं रहती है, इसलिए गाँव के बूढ़ी औरत भूरी को समझाती हैं कि वह दूसरा विवाह कर ले, लेकिन भूरी दूसरा विवाह करने से मना कर देती है। तथा बेटे को पढ़ाने के लिए शारीरिक और मानसीक दोनों रूपों से शोषित होती रहती है। कबूतरा समाज भूरी को सजा देने का निर्णय करता है क्योंकि वह बिरादरी की रिवाज तोड़ने पर आमादा थी। वह कबीले में छूत फैला रही थी। कबूतरा समाज को भय सताने लगता है कि कहीं उनके घर की औरतें भी भूरी की तरह मनमानी न करते लगे इस ली उसे सजा के रूप में जल समाधि देने का निर्णय मुखिया करता है, क्योंकि भूरी उसका विरोध कर अपमान किया है भूरी मुखिया से साफ-साफ कह देती है कि वह पवित्र नहीं है और परीक्षा नहीं देगी। लेकिन मुखिया और कबूरता समुदाय को यह मंजूर न था अतः भूरी को सजा देने के लिए षणयंत्र रचते हैं अल्मा के पिता के मौत के बाद दुर्जनसिंह उसे बेच देता है।

3.3.2 पुलिस समुदाय: पुलिस जो जनता की सुरक्षा के लिए होती है, वहीं पुलिस कबूतरा समाज का शोषण करती है। पुलिस डेरो पर तोड़-फोड़ ही नहीं करती है बल्कि औरतों को गंदी-गंदी गालियाँ देती है और औरतों को नंगा कर उसके के साथ दुर्व्यवहार करती है पुलिस कबूतरों से घुस लेकर शराब बेचने और चोरी, लूटपाट करने का उपाय देती है, भूरी बेटे को पढ़ने के लिए पुलिस के हाथों शोषित होती रहती है। मास्टर बनने के बाद भी वह सिपाहियों के दृष्टि में एक अपराधी कबूतरा ही रहता है, उसके वेतन का एक हिस्सा भी ले लेती है। पुलिस गंदी- गंदी गालियाँ देती है तथा रामसिंह लाचार हो कर सब सुनने के लिए मजबूर है। क्योंकि सिपाहियों की गंदी दृष्टि उनकी औरतों और लड़कियों पर होती है :

> सिपाहियों की निगाह से टपकती कामुक हँसी की बूँदें उसकी आँखों को छूकर फोड़ने लगीं। नहीं-नहीं, यह नहीं... उससे अच्छा है अल्मा का गला घोंट दूँगा। अल्मा की माँ को बेतवा में धकेल दूँगा। माँ का कैसा कलेजा था! अन्याय सहन करके न्याय की राह बुहारती रही! मैं बेईमानों के बीच से ईमानदारी निकाल नहीं पा रहा! इनका बोया जहर का पेड़ बड़ा उसकी जड़ें सैकडों वर्ष पुरानी हैं। पूरी धरती में फैल गई है। (पुष्पा 2016 :103)

सिपाही डाकुओं के साथ मिलकर घिनौनी खेल खेलती है। डाकू बेटासिंह के कहने पर वह पुलिस झूठी मुठभेड़ दिखाकर बेटा सिंह जैसे डाकूओं के स्थान पर भोले-भाले कबूतरों का हत्या कर उन्हें डाकू साबित कर इनाम का पैसा वापस में बांट लेते हैं। बेटा सिंह के स्थान पर जब कोई कबूतरा नहीं मिलता है, तो रामसिंह को ही बलि का बकरा बना कर उसकी हत्या कर देते हैं।

3.3.3 सभ्य समुदाय: लेखिका ने सभ्य समुदाय के दोहरे रूप को सामने लाने का सफल प्रयास किया है। मंसाराम सम्य समाज में अत प्रतिष्ठीत व्यक्ति है। लेकिन अंतरिक रूप से वह संकीर्ण मानसिकता के व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं वह जंगलिया से चोरी करवा कर उसे पुलिस के हाथों मरवा देते हैं तथा गेहूँ के खेतों में जंगलिया के स्थान पर स्वयं जा कर कदम के साथ शारीरिक संबंध बनाते हैं। सभ्य समुदाय के लोग कबूरतों को अपराधी कहते हैं वास्तव में असली अपराधी तो सभ्य समाज के लोग ही हैं, जो कबूतरों के हक छीनते हैं, उन्हें चोरी करने पर मजबूर करते हैं तथा उनके विरोध में षणयंत्र रचकर हत्या करवा देते हैं और

अपने आप को सभ्य कहते हैं। सूरजभान जैसे लोग अल्मा जैसी लड़कियों का बलात्कार ही नहीं करते हैं बल्कि उन्हें अपने कैद में रखते हैं जिनका इस्तेमाल उच्च अधिकारियों और नेताओं को खुश करने के लिए करते हैं। वसाणी कृष्णावंती पी के अनुसार,

> अल्मा अनेक प्रकार व अनेक लोगों द्वारा शोषित व पीड़ीत होती है, किन्तु उसे सहने की शक्ति अभुतपूर्व है। यह बात केवल अल्मा को लागू नहीं होती किन्तु सभी आदिवासी कबूतरा नारियों को भी लागू होता है।(वासीणी 2010:185)

दूसरी तरफ धीरज जैसे पढ़-लिखे लड़के बेरोजगारी के कारण मजबूर होकर सूरजभान के यहां लड़की की पहरेदारी की नौकरी करते हैं और अपनी जान पर खेलकर अल्मा जैसी लड़कियों को मुक्त कर देते हैं जिसके परिणाम स्वरूप उसे अपनी ईज्जत और पौरूष सब कुछ गँवाना पड़ता है।

3.3.4 राजनेता और डाकू समुदाय : लेखिका ने आज के राजनेताओं और डाकूओं के गठबंधन और उनकी काली करतूतों को सामने लाई है। बदलते समय के साथ राजनीति में बड़ा बदलाव आया है अब राजनीति ईमानदारों के लिए न होकर दलालों, डाकूओं असामाजिक तत्वों का घर बन गई है। आज राजनीति में सूरजभान, श्रीरामशास्त्री, बेटासिंह जैसे लोगों का ही बोलबाला है। बेटासिंह जैसे डाकू को सभी राजनीति दल अपने दल में आमंत्रित करते हैं चाहे वह समाजवादी पार्टी हो, बी.जे.पी हो या कांग्रेस। सूरजभान ने कांग्रेस की सभा में बम न फोड़ता तो उसकी राजनीति में भर्ती न होती? परसराम को पार्टी में पदवीं तब मिली जब उसने बीजेपी के दो लोगों की हत्या कर दी। सीताराम जैसे चेयरमैन किसी के नहीं होते हैं । वह कांग्रेसी हो कर मस्जिद गिराने का ठेका लेता है। मंदिर तुड़वाने का एडवांस जेब में लिए घूमता है।

समाज कल्याण मंत्री, जिसका दायित्व ही होता है जनता की रक्षा करना, लेकिन उसके आवास स्थान पर अल्मा जैसी लड़कियों को कैद करके रखा जाता है। और उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। अल्मा को श्रीराम शास्त्री को खुश करने के लिए प्रताड़ित किया जाता है, उसे नंगा कर मंत्री जी के सामने पेश किया जाता है। हांलाकि श्रीराम शास्त्री में धीरे-धीरे परिवर्तन आता है और वह अल्मा से प्रेम करने लगते हैं। एक स्थान पर श्रीराम शास्त्री नेताओं और डाकूओं का तुलना करते हुए सोचता है :

> अपने द्वारा किए गए कत्लों का ब्यौरा जोड़ते और राजनीति में दिन-दहाड़े होती हत्याओं से मुकाबला करते। न वे ही खूनखराबे के खिलाफ भाषण देने के हकदार हैं और न यहाँ का कोई नेता-मंत्री। (पुष्पा 2016 :355)

सूरजभान जैसे नेता लड़कियों का देह व्यपार करते हैं, तथा बड़े-बड़े नेताओं और अफसरों को खुश करने के लिए लड़कियों को अपने कैद में रखते हैं। बेटासिंह राजनीति में आने के लिए श्रीराम शास्त्री का हत्या करवा देता है ताकि वह उस सीट से राजनीति में आ सके।

4. विशेषता :

* *अल्मा कबूतरी* विलुप्त होती आदिवासी समुदाय और उस समुदाय की नारी की कहानी है
* *अल्मा कबूतरी* स्त्री और पुरुष के समाजिक स्थिति का तल्ख चित्रण है।
* परिवार, धर्म, राजनीति, और विभिन्न संस्थाओं में नारी को पुरुष से कमजोर तथा हीन समझा जाता है।
* नारी को आज भी वसितु समझा जाता है जिसका उपयोग समाज अपने सुविधा के अनुसार करता है।
* हमारे समाज नारी दोषि न होते हुए भी सजा की हकदार होती है, जबकि पुरुष दोषि होते हुए भी समाज में सम्मान पर्वक जीवन जीता है।

* आज आदिवासी नारियों में भी चेतना की जागृति हो रही है, जो अपने आप को मानव रूप में स्थापित करने के लिए संघर्षरत हैं।

5. निष्कर्ष : यह कहा जा सकता है कि अल्मा कबूतरी सामाजिक संस्थाओं के मध्य नारी और पुरुष वास्तविक स्थिति तथा नारी के प्रति भेद-भाव को अभिव्यक्त करता है। समाज में हमेशा से नारी को प्रताड़ीत और दण्डीत करने की व्यवस्था रही है आज भी हा आज भी नारी को खरीदा और बेचा जाता है। आज भी नारी को पुरुष के अधीन रहने की शिक्षा दी जाती है। तथा पुरुष को खुश रखना नारी का परम कर्त्तव्य माना जाता है। जिसका विरोध कदम, भूरी और अल्मा जैसी नारी पात्रों के माध्यम से किया गया है। एक स्वस्थ देश की कल्पना तभी की जा सकती है, जब उस देश के प्रत्येक नागरीक को समाज में समानता का अधिकार हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. पुष्पा., मैत्रेयी. *अल्मा कबूतरी.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016.
२. कालिया, ममता. *भविष्य का स्त्री विमर्श.* दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2015.
३. वसाणी, कृष्णावंती पी. *दसवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना.* कानपुर: जागृति प्रकाशन, 2010.
४. श्रीधर, प्रदीप. *स्त्री चिंतन की अंतर्धाराएँ और समकालीन हिंदी उपन्यास.* दिल्ली: 2010.
५. गोपाल राय, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2016.